राष्ट्रीय जैविक एवं प्राकृतिक खेती केंद्र, गाजियाबाद

बीजामृत

निर्माण की विधि

बुआई से पहले बीजों का संस्कार अर्थात संशोधन करना बहुत जरूरी है। इसके लिए बीजामृत ही उत्तम है। जीवामृत की भांति ही बीजामृत निम्नलिखित सामग्री से बनता है।

- देसी गाय का गोबर 5 कि. ग्रा.
- देसी गाय का मूत्र 5 लीटर
- चूना या कली 250 ग्राम
- पानी 20 लीटर
- खेत की मिट्टी मुट्ठी भर

इन सभी पदाथों को पानी में घोलकर 24 घंटे तक रखें। दिन में दो बार लकड़ी से हिलाना है। इसके बाद बीजों के ऊपर बीजामृत डालकर उन्हें शुद्ध करना है। उसके बाद छाया में सुखाकर फिर बुआई करनी है।

बीजामृत द्वारा शुद्ध हुए बीज जल्दी और ज्यादा मात्रा में उगते हैं। जड़ें तेजी से बढ़ती हैं। पौधे, भूमि द्वार लगने वाली बीमारियों से बचे रहते हैं एवं अच्छी प्रकार से पलते-बढ़ते हैं।

जीवामृत

यह सूक्ष्म जीवाणुओं का एक विशाल भण्डार है और ये सारे सूक्ष्म जीवाणु जो पोषक-तत्व प्रयोग में लाने योग्य नहीं होते, उनको प्रयोग में लाने योग्य बना देते हैं। दूसरे शब्दों में ये सूक्ष्म जीवाणु भोजन बनाने का कार्य करते हैं इसलिए हम इन्हें पेड-पौधों का भोजन निर्माण कर्ता भी कह सकते हैं ।

देसी गाय के एक ग्राम गोबर में असंख्य सूक्ष्म जीवाणु होते हैं। जब हम जीवामृत तैयार करते हैं तो उसमें हम देसी गाय के 10 कि.ग्रा. गोबर को 200 लीटर पानी में मिलाते हैं। ऐसा करने पर मानों हमने लाखों करोड़ जीवाणु उसमें डाल दिये। ये जीवाणु धीरे धीरे अपनी संख्या दोगुनी कर लेते हैं। 72 घंटे बाद इनकी संख्या असंख्य हो जाती है। इस जीवामृत को जब हम पानी के साथ भूमि पर डालते हैं तो यह पेड़-पौधों को भोजन देने, पकाने एवं तैयार करने में जुट जाता है।भूमि में जाते ही जीवामृत धरती के भीतर 10 से 15 फीट तक जाकर समाधि की स्थिति में बैठे हुए देसी केंचुए तथा दूसरे जीव-जन्तुओ को ऊपर की ओर खींचकर उन्हें कार्यशील कर देता है।

जीवामृत का निर्माण

- देसी गाय का गोबर 10 कि. ग्रा.
- देसी गाय का मूत्र 8 – 10 लीटर
- गुड़ 1-2 कि. ग्रा.
- बेसन 1-2 कि. ग्रा.
- पानी 180 लीटर
- पेड़ के नीचे की मिट्टी 1 कि. ग्रा.

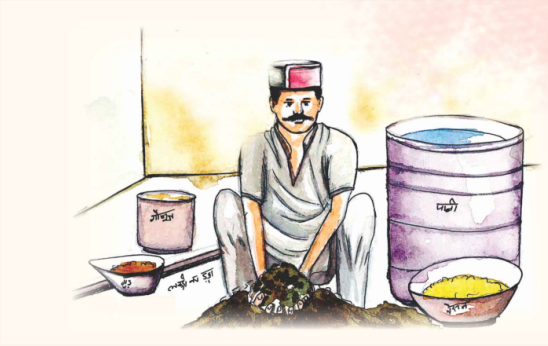

उपरोक्त सामग्रियों को प्लास्टिक के एक ड्रम में डालकर लकड़ी के डंडे से घोलना है और इस घोल को दो से तीन दिन तक सड़ने के लिए छाया में रख देना है। प्रतिदिन दो बार सुबह-शाम घड़ी की सुई की दिशा में लकड़ी के डंडे से दो मिनट तक इसे घोलना है और जीवामृत को बोरे से ढक देना है। इसके सड़ने से अमोनिया,कार्बनडाईआक्साकइड, मीथेन जैसी हानिकारक गैसों का निर्माण होता है। गर्मी के महीने में जीवामृत बनने के बाद सात दिन तक उपयोग में लाना है और सर्दी के महीने में 8 से 15 दिन तक उसका उपयोग कर सकते हैं। उसके बाद बचा हुआ जीवामृत भूमि पर फेंक देना है।

घनजीवामृत

घनजीवामृत का निर्माण

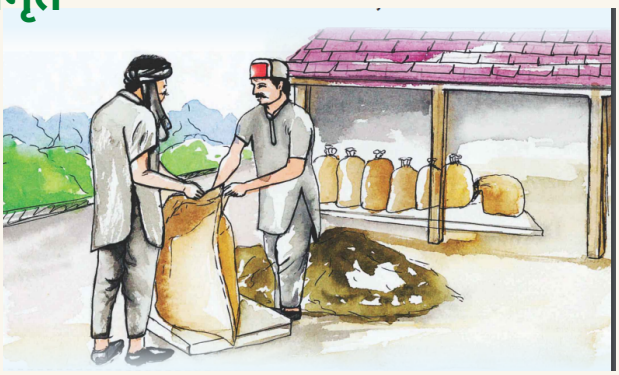

- 100 कि.ग्रा. देसीगाय का गोबर
- 1 कि.ग्रा.गुड
- 2 कि.ग्रा. दलहन का आटा
- एक मुट्ठी खेत की मिट्टी
- थोडा-सा गोमूत्र

उपरोक्त सभी पदार्थों को अच्छी तरह से मिलाकर गूंथ लें ताकि उसका हलवा, लड्डू जैसा गाढ़ा बन जाये। उसे 2 दिन तक बोरे से ढककर रखें और थोड़ा पानी छिड़क दें। बाद में उसे इतना घना बनाएं, जिससे उसके लड्डू बनें। अब इस घनजीवामृत के लड्डू को कपास, मिर्च, टमाटर, बैंगन, भिण्डी, सरसों के बीज के साथ भूमि पर रख दें। उसके ऊपर सूखी घास डालें। यदि आपके पास डिप सिंचन है तो घनजीवामृत के ऊपर सूखी घास रखकर घास पर डिपर से पानी डालें।

ये घनजीवामृत के लड्डू आप पेड-पौधों के पास रख सकते हैं ताकि जीवामृत जड़ों तक पहुंच सके, इसके लिए भूमि में नमी नहीं होनी चाहिए।